bhartiya nadi parishad

नमामि गंगे

NEER FOUNDATION

german cooperation
DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT

Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH

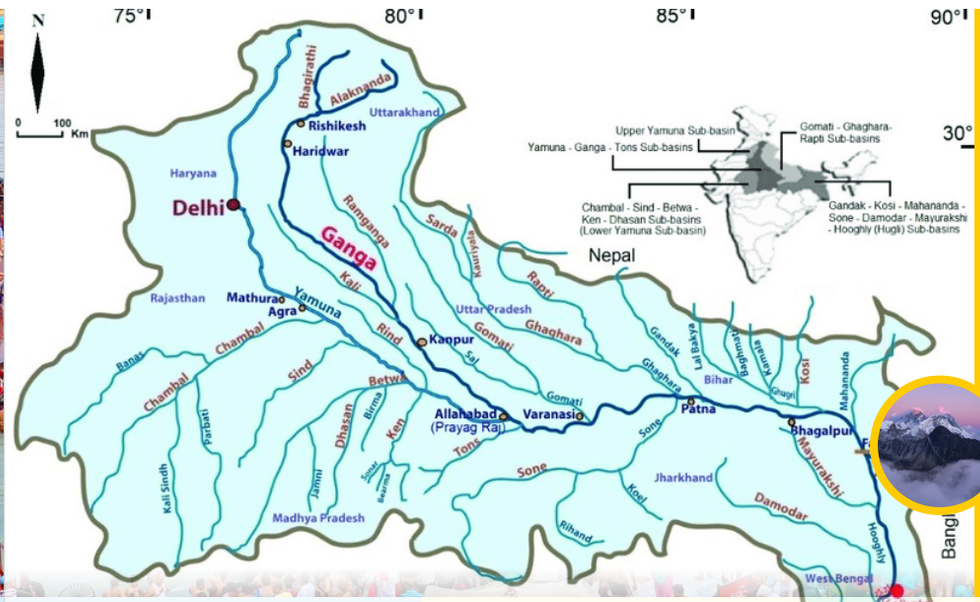

गंगा नदी का परिचय

भारत देश की पहचान की जब बात आती है तो उसमें गांधी, गांव व गंगा का जिक्र होता है। पौराणिक महत्व की यह नदी गंगा भारत की आत्मा है, क्योंकि इसके साथ देशवासियों की जहां धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक भावनाएं जुड़ी हुई हैं वहीं यह नदी देश की करीब 40 करोड़ आबादी को पानी व भोजन उपलब्ध कराने का माध्यम बनती है। गंगा के इन्हीं गुणों व महत्वों को देखते हुए इसे 2008 में भारत सरकार द्वारा राष्टरीय नदी घोषित किया गया था। आज गंगा भारत की राष्टरीय नदी है। भारत में गंगा नदी की घाटी में पांच राज्य उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड व पश्चिम बंगाल हैं जबकि इसकी घाटी में देश के 11 राज्य शामिल हैं। गंगा नदी की कुल लम्बाई 2525 किलोमीटर है जबकि भारत में नदी 2071 किलोमीटर का सफर तय करके बांग्लादेश में चली जाती है। भारत में गंगा नदी सर्वाधिक 1000 किलोमीटर उत्तर प्रदेश में बहती है। गंगा नदी का जलग्रहण क्षेत्र 861404 किलोमीटर है। भारत के करीब 26 प्रतिशत भूभाग को गंगा नदी आच्छादित करती है जबकि देश के जल संसाधनों में गंगा नदी का 28 प्रतिशत योगदान है। भारत की करीब 43 प्रतिशत आबादी गंगा नदी पर निर्भर करती है। गंगा नदी के कारण ही इस बड़ी आबादी को भोजन व पानी मिलता है। भारत के कुल कृषि क्षेत्रफल के करीब 57 प्रतिशत को गंगा नदी उपजाउ बनाती है। गंगा नदी में मगरमच्छ, कछुए, सांप व 143 प्रकार की मछलियों सहित विभिन्न प्रकार के जलीय जीव पाए जाते हैं। बांग्लादेश में गंगा नदी 454 किलोमीटर का सफर तय करके सुन्दरवन डेल्टा बनाते हुए बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है। बांग्लादेश में गंगा को ब्रहमपुत्र अर्थात जमुना नदी में मिलने से पहले पद्मा नदी के नाम से जानी जाती है जबकि ब्रहमपुत्र अर्थात जमुना से मिलने के बाद मेघना नदी बन जाती है। सुन्दरवन डेल्टा वास्तव में यही मेघना नदी बनाती है। भारत में गंगा करीब दस लाख वर्ग किलोमीटर उपजाउ मैदान बनाती है। नदी जल में बैक्टीरियाफैज नामक विषाणु पाया जाता है जिस कारण से गंगा जल लम्बे समय ता सड़ता नहीं है।

गंगा नदी के पर्यायवाची शब्द:

मन्दाकिनी, भागीरथी, सुरसरिता, देवनदी, विष्णुपदी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनन्दा, देवनदी, सुरधुनि, सुरनदी, स्वर्गापगा, जाहन्वी, सुरसरि, अमरतरंगिनी, नदीश्वरी, त्रिपथगा।

गंगा का पौराणिक परिचय:

गंगा नदी कैसे उत्पन्न हुई? इस संबंध में कुछप्रचलित पौराणिक मान्यताएं निम्न हैं।

1. ऐसी मान्यता है कि गंगा का जन्म ब्रहमा के कमण्डल से हुआ था। इसके पीछे मान्यता है कि ब्रहमाजी ने विष्णुजी के चरणों को पखारा और उस जल को अपने कमण्डल में भर लिया। इसलिए कहा जाता है कि विष्णु जी के पैर के अंगूठे से गंगा प्रकट हुई, जिस कारण से गंगा नदी को विष्णुपदी भी कहा जाता है।
2. एक मान्यता है कि गंगा नदी पर्वतों के राजा हिमवान और उनकी पत्नी मीना की पुत्री हैं। इस प्रकार वे देवी पार्वती की बहन भी हैं। गंगा को ब्रहमा के कुल से भी जोड़ा जाता है।
3. एक मान्यता है कि जिस प्रकार राज दक्ष की पुत्री माता सती ने हिमालय के यहां पार्वती के नाम से जन्म लिया था उसी तरह माता गंगा ने अपने दूसरे जन्म में ऋषि जहनु के यहां जन्म लिया था।
4. एक मान्यता में पैराणिक शास्त्रों के अनुसार गंगा अवतरण हेतु ऋषि भागीरथ ने घोर तपस्या की थी। इससे प्रसन्न होकर ब्रहमाजी ने गंगा की धारा को अपने कमण्डल से छोड़ा था। कमण्डल से निकली गंगा के विशाल वेग को भगवान शंकर ने अपनी जटाओं में समेट लिया था। भागीरथ की आराधना के बाद भगवान शंकर ने गंगा को अपनी जटाओं से मुक्त कर धरती पर उतारा था।
5. पुराणों के अनुसार वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि को गंगा नदी स्वर्गलोक से सबसे पहले भगवान शंकर की जटाओं में पहुंची और फिर धरती पर गंगा दशहरा के दिन अतरीं।
6. मान्यता है कि ब्रहमचारिणी गंगा के द्वारा किए स्पर्श से ही महादेव ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। पत्नी पुरूष की सेवा करती है अतः पत्नी का स्थान पुरूष के हदय में होता है किन्तु गंगा नदी शंकर के मस्तक पर विराजितहैं।
7. मान्यता है कि शंकर व पार्वती के पुत्र कार्तिकेय का गर्भ भी देवी गंगा ने ही धारण किया था। गंगा के पिता हिमवान थे अतः पार्वती की बहन मानी जाती हैं। स्कंद पुराण के अनुसार देवी गंगा कार्तिकेय की सौतेली माता हैं। कार्तिकेय वास्तव में शंकर व पार्वती के पुत्र हैं।
8. मान्यता है कि जहनु ऋषि की पुत्री गंगा ने राजा शांतनु से विवाह करके सात पुत्रों को जन्म दिया और सभी को नदी में बहा दिया था। जब आठवां पुत्र हुआ तो राजा शांतनु ने पूछलिया कि तुम ऐसा क्यों कर रही हो? ऐसा सुनकर गंगा ने जवाब दिया कि विवाह की शर्त के मुताबिक तुम्हें ऐसा नहीं पूछना चाहिए था। अब मुझे पुनः स्वर्ग जाना होगा और यह आठवीं सन्तान अब तुम्हारे हवाले करती हूं। वही आठवीं सन्तान आगे चलकर भीष्म पितामह के नाम से विख्यात हुई।
9. मान्यता है कि गंगा नदी में ही समुन्द्र मंथन से निकला अमृत कुम्भ का अमृत दो जगह गिरा था। पहला प्रयागराज व दूसरा हरिद्वार।
10. ऋग्वेद, शतपथ ब्रहामण, पंचविश ब्रहामण, गौपथ ब्रहामण, ऐतरेय आरण्यक, कौशितकी आरण्यक, सांख्यायन आरण्यक, वाजसनेयी संहिता, रामायण और महाभारत इत्यादि में गंगा महिमा का वर्णन मिलता है।

ऐतिहासिक महत्व

1. ब्रहमा से 23वीं पीढ़ी बाद और राम से 14वीं पीढ़ी पूर्व भगीरथ हुए। भगीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था। इससे पहले अनके पूर्वज सगर ने भारत में कई नदी जलराशियों का निर्माण किया था। वहां से भगीरथ ने गंगा को नीचे धरती पर उतारा। भारत की अनेक धार्मिक अवधारणाओं में गंगा नदी को देवी के रूप में निरूपित किया गया है। परन्तु गंगा नदी व देवी गंगा में अन्तर बताना कठिन है।
2. हिमालय से निकलकर गंगा 12 धाराओं में विभक्त होती है इसमें मन्दाकिनी, भागीरथी, धौलीगंगा और अलकनन्दा प्रमुख हैं। गंगा की प्रमुख शाखा भागीरथी है जो कुमांउ में हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद से निकलती है। यहां गंगाजी को समर्पित एक मन्दिर भी है।
3. गंगा नदी का उद्गम दक्षिणी हिमालय में तिब्बत सीमा के भारतीय हिस्से से होता है। गंगोत्री को गंगा का उद्गम माना गया है। सर्वप्रथम गंगा का अवतरण होने के कारण ही यह स्थान गंगोत्री कहलाया।
4. गंगा का उद्गम गंगोत्री से 18 मील उपर श्रीमुख नामक पर्वत से है। वहां गोमुख के आकार का एक कुण्ड है जिसमें से गंगा की धारा फूटी है। 3900 मीटर उंचा गौमुख गंगा का उद्गम स्थल है। इस गोमुख कुण्ड में पानी हिमालय के और भी अधिक उंचाई वाले स्थान से आता है।
5. हिमाचल प्रदेश के हिमालय से निकलकर यह नदी प्रारम्भ में तीन धाराओं मन्दाकिनी, अलकनन्दा व भागीरथी में विभक्त होती है। देवप्रयाग में अलकनन्दा और भागीरथी का संगम होने के बाद यह गंगा के रूप में दक्षिण हिमालय से ऋषिकेश के निकट बाहर आती है और हरिद्वार के बाद मैदानी इलाकों में प्रवेश करती है।
6. उत्तराखण्ड के बाद गंगा नदी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड व पश्चिमी बंगाल से होते हुए बांग्लादेश में चली जाती है।
7. इस बीच गंगा में कई नदियां मिलती हैं जिसमें सरयू, यमुना, सोन, रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, कोसी, घाघरा, महानन्दा, हुगली, पद्मा, दामोदर, रूपनारायण व ब्रहमपुत्र प्रमुख हैं।
8. गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक गंगा के तट पर हजारों तीर्थ हैं। गंगा को भारत का हदय माना जाता है। इसके एक ओर सिन्धु और सरस्वती बहती है तो दूसरी ओर ब्रहमपुत्र। महाभारत के अनुसार प्रयागराज में माघ मास में गंगा-यमुना संगम के तट पर तीर करोड़ दस हजार तीर्थ का संगम होता है।
9. ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह ज्ञात होता है कि 16वीं तथा 17वीं शताब्दी तक गंगा-यमुना प्रदेश घने वनों से ढका हुआ था। इन वनों में जंगली हाथी, भैंस, गैंड़ा, शेर, बाघ तथा गावल का शिकार होता था। यहां लाखों तरह के पशु-पक्षी विचरण करते थे।
10. गंगा में 140 प्रजातियों की मछलियां, 35 सरीसृप तथा इसके तट पर 42 स्तनधारी प्रजातियां पाई जाती हैं। गंगा के पर्वतीय किनारों पर लंगूर, लाल बन्दर, भूरे भालू, लोमड़ी, चीते, बफीर्ले चीते, हिरण, भौंकने वाले हिरण, सांभर, कस्तूरी मृग, सेरो, बरड़ मृग, साही, तहर आदि काफी संख्या में मिलते हैं। विभिन्न रंगों की तितलियां तथा कीट भी यहां पाए जाते हैं।

ऐसी मान्यता है कि ज्येष्ठ माह की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गंगा नदी का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था, इसलिए गंगा दशहरा का पर्व भी इस तिथि पर ही मनाया जाता है। गंगा नदी के संबंध में दस पौराणिक व दस ऐतिहासिक तथ्य निम्नलिखित हैं।

रमन कान्त (रिवरमैन ऑफ इण्डिया)

संस्थापक अध्यक्ष: भारतीय नदी परिषद्

मुख्य कार्यकारी अधिकारी: इण्डियन रिवर काउंसिल

अध्यक्ष: नीर फाउंडेशन